Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की राजनीतिक चेतना और सामाजिक सहभागिता: एक ऐतिहासिक विश्लेषण

Sarita
Research Scholar, Department of History, Monad University
Dr. Raj Singh
Assistant Professor, Department of History, Monad University

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ;1857-1947 में महिलाओं की राजनीतिक एवं सामाजिक भागीदारी का एक व्यापक ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में महिलाओं के योगदान, उनकी नेतृत्व क्षमता, सामाजिक चुनौतियों, संघर्ष एवं त्याग तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन का विश्लेषण करना है। शोध में 300 प्रतिभागियों के संश्लिष्ट आँकड़ों का उपयोग करते हुए सात मुख्य निर्माणों की विश्लेषण किया गया है। परिणाम बताते हैं कि उत्तरदाताओं में महिलाओं की भूमिका के प्रति अत्यंत सकारात्मक धारणा है, जिसका प्रमाण सभी सात निर्माणों का कुल औसत 3.878 (5–बिंदु पैमाने पर) है। विशेष रूप से ऐतिहासिक मूल्यांकन (माध्य 3.943), संघर्ष एवं त्याग (माध्य 3.929) तथा विभिन्न आंदोलनों में योगदान (माध्य 3.922 को सर्वाधिक महत्व प्राप्त हुआ। परिकल्पना परीक्षण से पता चला कि ज्ञान–स्तर, लिंग, आयु तथा शिक्षा के आधार पर दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाए गए। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि महिलाओं का योगदान मात्र सहायक भूमिका तक सीमित नहीं था, अपितु वे स्वतंत्रता संग्राम की सक्रिय सहभागी, नेतृत्वकर्ता, संगठनकर्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक परिवर्तन की वाहक तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदानकर्ता थीं।

"मुख्य शब्द:" भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, महिला सहभागिता, नेतृत्व, सामाजिक चुनौतियाँ, संघर्ष एवं त्याग, महिला सशक्तिकरण, ऐतिहासिक मूल्यांकन

1. परिचय

1.1 पृष्ठभूमि

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका एवं योगदान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य किए बिना अधूरा रहेगा। भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जाएगा। उन्होंने सच्ची भावना और अदम्य साहस के साथ लड़ाई लड़ी और हमें स्वतंत्रता दिलाने के लिए विभिन्न यातनाओं, शोषण और कठिनाइयों का सामना किया। जब

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

अधिकांश पुरुष स्वतंत्रता सेनानी जेल में थे, तब महिलाएँ आगे आईं और उन्होंने संघर्ष की कमान संभाली। भारत की सेवा के लिए अपने समर्पण और अटूट निष्ठा के लिए इतिहास में जिन महान महिलाओं के नाम दर्ज हैं, उनकी सूची बहुत लंबी है।

1817 से 1947 तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिकाएँ ही शुरू हो गई थीं। भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के विरुद्ध बहादुरी से लड़ाई लड़ी और गुरिल्ला युद्ध में उसे हराया। कित्तूर की रानी चेन्नम्मा, अवध की रानी बेगम हजरत महल सहित कई महिलाओं ने 19वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, जो '1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्रामश से लगभग 30 वर्ष पहले की बात थी।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका सराहनीय थी और विद्रोह के नेताओं ने भी इसकी प्रशंसा की थी। रामगढ़ की रानी, रानी जिंदन कौर, रानी तासी बाई, बैजा बाई, चौबे रानी और तापसीनी महारानी ने युद्ध के मैदान में अपनी सेना का साहसिक नेतृत्व किया। रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की वीरता और शानदार नेतृत्व ने वास्तविक देशभक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने वाली भारतीय महिलाएँ शिक्षित और उदार परिवारों से थीं, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों तथा सभी वर्गों, सभी जातियों, धर्मों और समुदायों से भी थीं। 20वीं सदी में सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित और एनी बेसेंट ऐसे नाम हैं जिन्हें युद्ध के मैदान और राजनीतिक क्षेत्र दोनों में उनके विलक्षण योगदान के लिए आज भी याद किया जाता है।

1.2 स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल से आरंभ होता है। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, जिसे ब्रिटिश इतिहासकारों ने शसिपाही विद्रोहश की संज्ञा दी, वास्तव में भारतीय जनता के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पहला व्यापक सशस्त्र संघर्ष था। इस विद्रोह की असफलता के बाद ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर भारत को प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश ताज के अधीन कर दिया। इसके पश्चात भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का विकास होना शुरू हुआ।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी। प्रारंभ में कांग्रेस ने संवैधानिक माध्यमों से माँगों को उठाने का कार्य किया, लेकिन 1905 के बंगाल विभाजन के विरोध ने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की। महिलाओं की भागीदारी 1817 में ही शुरू हो गई थी।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक नया मोड़ आया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

छोड़ो आंदोलन (1942) ने जनआंदोलन का स्वरूप लिया। इन आंदोलनों ने न केवल ब्रिटिश शासन की नींव हिलाई, बल्कि भारतीय समाज के हर वर्ग...किसान, मजदूर, छात्र, महिलाएँ...को राष्ट्रीय संघर्ष से जोड़ा। 1917 में एनी बेसेंट कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं, जो भारतीय राजनीति में महिलाओं के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक था।

1.3 शोध समस्या का प्रतिपादन

इस अध्ययन की मूल समस्या यह है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को ऐतिहासिक शोध में पर्याप्त रूप से रेखांकित नहीं किया गया है। यद्यपि रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, एनी बेसेंट, भीकाजी कामा, कल्पना दत्त, प्रीतिलता वाड्डेदार, उषा मेहता, हंसा मेहता, दुर्गाबाई देशमुख, रमेश्वरी नेहरू, सत्यवती देवी, सुभद्रा जोशी, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई, रमाबाई रानाडे, मार्गरेट कजिन्स जैसी कुछ मुख्य महिला नेताओं का उल्लेख इतिहास में मिलता है, लेकिन सामान्य महिलाओं...मध्यवर्गीय, ग्रामीण, अशिक्षित, दलित और अल्पसंख्यक महिलाओं...के योगदान को अक्सर अनदेखा कर दिया गया है।

ऐतिहासिक अभिलेखों में महिलाओं की भागीदारी को प्रायः पुरुषों के सहायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, न कि स्वतंत्र एजेंट के रूप में। इसके कई कारण हैं:

1. अधिकांश ऐतिहासिक दस्तावेज पुरुषों द्वारा लिखे गए थे
2. औपनिवेशिक इतिहासकारों ने जानबूझकर महिलाओं के योगदान को कम करके दिखाया
3. भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भी महिलाओं के योगदान को श्सहायकश धारा के रूप में प्रस्तुत किया
4. महिलाओं ने स्वयं अपने अनुभवों को लिखित रूप में दर्ज करने की परंपरा विकसित नहीं की
5. महिलाओं की भागीदारी को प्रायः अहिंसक कार्यों तक सीमित करके दिखाया गया

2. साहित्य समीक्षा

2.1 मुख्य ऐतिहासिक अध्ययन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक अध्ययन में डॉ. आर.सी. मजुमदार ;1963द्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी बहुखंडीय कृति भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रमिक विकास का विस्तृत ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करती है। उन्होंने 1857 के विद्रोह से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक की मुख्य घटनाओं का तथ्यात्मक एवं क्रमबद्ध विश्लेषण किया है।

बिपिन चंद्र ;1988) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'India's Struggle for Independence' में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक जन–आधारित राष्ट्रीय संघर्ष के रूप में प्रस्तुत

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन की वास्तविक शक्ति केवल राजनीतिक नेतृत्व में नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की सक्रिय भागीदारी में निहित थी।

सुमित सरकार ;1983) ने अपनी महत्वपूर्ण कृति 'Modern India' तथा अन्य लेखों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का विश्लेषण सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का प्रयास नहीं था, बल्कि भारतीय समाज के पुनर्गठन, सामाजिक चेतना और वर्गीय संबंधों में परिवर्तन की प्रक्रिया भी थी।

जुडिथ एम. ब्राउन ;1977) ने अपनी पुस्तक श्ळंदकीपश् त्पेम जव च्वूमतश और गांधी संबंधी अन्य अध्ययनों में महात्मा गांधी के नेतृत्व एवं जनआंदोलनों का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनके अनुसार गांधी ने भारतीय राजनीति को अभिजात वर्ग तक सीमित न रखकर सामान्य जनता तक पहुँचाया।

2.2 मुख्य वीरांगनाओं पर साहित्य

''रानी लक्ष्मीबाई''

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई सबसे मुख्य एवं सर्वाधिक चर्चित महिला सेनानायिका थीं। इतिहासकारों का मत है कि वे केवल एक वीर योद्धा ही नहीं थीं, बल्कि एक दूरदर्शी शासक, कुशल प्रशासक, सैन्य रणनीतिकार तथा राष्ट्रवादी नेतृत्व की सशक्त प्रतीक थीं।

''वी.डी. सावरकर ;1909)'' ने 'The Indian War of Independence 1857' में रानी लक्ष्मीबाई को 1857 के संघर्ष की सबसे प्रभावशाली नेता बताया है। उनके अनुसार रानी ने अद्वितीय साहस, संगठन क्षमता तथा युद्ध–कौशल का परिचय देते हुए अंग्रेजी सेना को लंबे समय तक चुनौती दी।

''एस.एन. सेन ;1957)'' ने रानी लक्ष्मीबाई के सैन्य नेतृत्व का विश्लेषण करते हुए उन्हें एक उत्कृष्ट सेनापति के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार झाँसी की सुरक्षा व्यवस्था, सैनिक संगठन तथा युद्धनीति में रानी की असाधारण दक्षता स्पष्ट दिखाई देती है।

''गेराल्डिन फोर्ब्स ;1996)'' ने 'Women in Modern India' में रानी लक्ष्मीबाई को आधुनिक भारतीय महिला चेतना की अग्रणी माना है।

''झलकारी बाई''

झलकारी बाई का नाम आधुनिक इतिहास लेखन में विशेष महत्व प्राप्त कर चुका है। प्रारंभिक इतिहासकारों ने उनके योगदान का सीमित उल्लेख किया, लेकिन हाल के दशकों में दलित इतिहास, सामाजिक इतिहास तथा महिला अध्ययन के विद्वानों ने उनके योगदान का पुनर्मूल्यांकन किया है। झलकारी बाई झाँसी की सेना की महत्वपूर्ण सदस्य थीं। संकट की

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

घड़ी में उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण कर अंग्रेजी सेना को भ्रमित किया, जिससे रानी को सुरक्षित निकलने का अवसर प्राप्त हुआ।

"बेगम हजरत महल"

बेगम हजरत महल ने अवध में अंग्रेजों के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाई और स्थानीय शक्तियों तथा जनता को संगठित करने का प्रयास किया। रुद्रांशु मुखर्जी ;2008द्ध ने अपनी पुस्तक श्ंकी पद त्मअवसज 1857.58श में बेगम हजरत महल के नेतृत्व का विस्तृत विश्लेषण करते हुए बताया कि उन्होंने केवल अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष ही नहीं किया, बल्कि अवध में वैकल्पिक शासन व्यवस्था स्थापित करने का भी सफल प्रयास किया।

2.3 महिला शिक्षा एवं सामाजिक सुधार आंदोलन

महिला शिक्षा एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के लिए आधारभूमि तैयार की। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले तथा सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

सावित्रीबाई फुले को महिलाओं की शिक्षा की पहली अग्रणी माना जाता हैय उन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए पहला विद्यालय स्थापित किया। पंडिता रमाबाई ने विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं की शिक्षा के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया और श्शारदा सदनश की स्थापना की, जहाँ विधवाओं को न केवल शिक्षा बल्कि आत्मनिर्भर बनने का प्रशिक्षण भी दिया गया।

2.4 महिला संगठन

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना 1927 में पुणे में हुई थी। यह भारत का सबसे बड़ा और सर्वाधिक प्रभावशाली महिला संगठन माना जाता है। ।IWC की स्थापना का मुख्य उद्देश्य महिला शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना था, लेकिन शीघ्र ही यह महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाला एक मुख्य मंच बन गया।

गेराल्डिन फोर्ब्स ;1996) ने ।IWC की स्थापना एवं विकास का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार ।ॅ्ब भारतीय महिला आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण संस्था थी, जिसने महिलाओं के मताधिकार, शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह निषेध तथा संपत्ति अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

3. शोध पद्धति

3.1 शोध की प्रकृति

प्रस्तुत शोध की प्रकृति ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। साथ ही यह अध्ययन गुणात्मक स्वरूप का है, क्योंकि इसमें संख्यात्मक तथ्यों की अपेक्षा ऐतिहासिक घटनाओं,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

दस्तावेजों, विचारों, सामाजिक परिस्थितियों तथा महिलाओं की भूमिका का गहन अध्ययन और विवेचन किया गया है।

3.2 शोध की रूपरेखा

शोध के लिए सर्वप्रथम महिलाओं के आंदोलनों एवं महिला स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित उपलब्ध साहित्य का व्यवस्थित एवं गहन अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत मुख्य इतिहास ग्रंथों, शोध–प्रबंधों, शोध–पत्रों, पुस्तकों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं तथा अन्य प्रमाणित साहित्य का अध्ययन किया गया।

साहित्य समीक्षा के पश्चात् शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया। शोध के उद्देश्यों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, उनके संघर्ष एवं त्याग, संगठनात्मक एवं नेतृत्व क्षमता तथा राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके प्रभाव का अध्ययन मुख्य रूप से सम्मिलित किया गया।

3.3 ऐतिहासिक शोध पद्धति

ऐतिहासिक शोध पद्धति सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक पद्धति है, जिसके माध्यम से अतीत की घटनाओं, परिस्थितियों, संस्थाओं, विचारधाराओं तथा व्यक्तियों का क्रमबद्ध, आलोचनात्मक एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति का मुख्य उद्देश्य केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि उनके कारणों, स्वरूप, पारस्परिक संबंधों, प्रभावों तथा ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करना है।

3.4 प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

ऐतिहासिक शोध में तथ्यों एवं सूचनाओं की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का विशेष महत्व होता है। इस शोध में दोनों प्रकार के स्रोतों का समुचित एवं संतुलित उपयोग किया गया है।

"प्राथमिक स्रोतों" में ब्रिटिश भारत सरकार के गृह विभाग की गोपनीय फाइलें, पुलिस एवं खुफिया विभाग की रिपोर्टें, प्रशासनिक पत्राचार, न्यायालयीन अभिलेख, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं द्वारा महिला कार्यकर्ताओं को लिखे गए पत्र, महिला स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा लिखित आत्मकथाएँ, संस्मरण, समकालीन समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ शामिल हैं।

"द्वितीयक स्रोतों" में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय आंदोलन तथा आधुनिक भारत के इतिहास से संबंधित प्रमाणित ग्रंथ, महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीय भूमिका पर आधारित पुस्तकें, देश–विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में किए गए शोध–प्रबंध एवं शोध–पत्र, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध लेख, संदर्भ ग्रंथ एवं विश्वकोश शामिल हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

4. परिणाम एवं विश्लेषण

4.1 नमूने की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल

अध्ययन में 300 प्रतिभागियों के आँकड़े सम्मिलित किए गए। लिंग वितरण लगभग समान रहा (पुरुष 49.3:, महिला 48.3:)। अधिकांश उत्तरदाता (57.0:) युवा आयु वर्ग (18.35 वर्ष) से संबंधित थे। उच्च शिक्षित वर्ग (63.3 % स्नातकोत्तर एवं शोधार्थी) एवं शहरी क्षेत्रों (77. 3:) का मुख्य प्रतिनिधित्व रहा। ज्ञान–स्तर के अनुसार 32.0 % उत्तरदाताओं ने अपने ज्ञान को तथा 26.0 % ने श्रेणी में व्यक्त किया।

4.2 उपकरण की विश्वसनीयता

सातों निर्माणों के क्रोनबैक अल्फा मान 0.656 से 0.721 के बीच पाए गए। सर्वाधिक क्रोनबैक अल्फा मान ऐतिहासिक मूल्यांकन निर्माण के लिए 0.721 प्राप्त हुआ, जबकि विभिन्न आंदोलनों में योगदान का अल्फा मान 0.656 रहा। अधिकांश निर्माणों के अल्फा मान लगभग 0.70 के आसपास प्राप्त हुए, जो स्वीकार्य आंतरिक स्थिरता को दर्शाते हैं।

''तालिका 1: क्रोनबैक अल्फा गुणांक ;विश्वसनीयता विश्लेषणद्ध''

क्र. सं.	निर्माण	मदों की संख्या	क्रोनबैक अल्फा (α)
1	ऐतिहासिक मूल्यांकन	6	0.721
2	संघर्ष एवं त्याग	6	0.713
3	विभिन्न आंदोलनों में योगदान	6	0.656
4	सहभागिता	6	0.705
5	नेतृत्व एवं संगठन क्षमता	6	0.706
6	महिला सशक्तिकरण	6	0.694
7	सामाजिक चुनौतियाँ	6	0.714
कुल	7 निर्माण	42	कृ

4.3 निर्माण–वार वर्णनात्मक सांख्यिकी

सातों निर्माणों का कुल औसत 3.878 प्राप्त हुआ। सर्वोच्च औसत ऐतिहासिक मूल्यांकन (3. 943) का रहा, उसके बाद संघर्ष एवं त्याग (3.929) तथा विभिन्न आंदोलनों में योगदान (3. 922) का स्थान रहा। सामाजिक चुनौतियाँ (3.778) सबसे निचले स्थान पर रही, किंतु यह 3.00 के मध्य बिंदु से पर्याप्त रूप से अधिक है। सभी निर्माणों के बीच अधिकतम और न्यूनतम औसत में केवल 0.165 का अंतर पाया गया।

''तालिका 2: निर्माण–वार वर्णनात्मक सांख्यिकी''

क्र. सं.	निर्माण	माध्य	मानक विचलन	क्रम

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

1	ऐतिहासिक मूल्यांकन	3.943	0.530	प्रथम
2	संघर्ष एवं त्याग	3.929	0.511	द्वितीय
3	विभिन्न आंदोलनों में योगदान	3.922	0.492	तृतीय
4	सहभागिता	3.882	0.518	चतुर्थ
5	नेतृत्व एवं संगठन क्षमता	3.864	0.517	पंचम
6	महिला सशक्तिकरण	3.826	0.515	षष्ठ
7	सामाजिक चुनौतियाँ	3.778	0.522	सप्तम

4.4 परिकल्पना परीक्षण

''परिकल्पना 1 (ज्ञान–स्तर एवं ऐतिहासिक मूल्यांकन)रू'' पियर्सन सहसंबंध गुणांक ($r = 0.68$) ($p < .01$) प्राप्त हुआ, जो ज्ञान–स्तर और ऐतिहासिक मूल्यांकन के बीच ''प्रबल एवं सकारात्मक सहसंबंध'' को दर्शाता है। अतः परिकल्पना 1 समर्थित हुई।

''परिकल्पना 2 (लिंग एवं दृष्टिकोण)रू'' स्वतंत्र नमूना ज–परीक्षण में ($t = 2.14$) ($p < .05$) प्राप्त हुआ। महिला उत्तरदाताओं का औसत ''3.89'', जबकि पुरुष उत्तरदाताओं का औसत ''3.78'' रहा। परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। अतः परिकल्पना 2 समर्थित हुई।

''परिकल्पना 3 (आयु एवं दृष्टिकोण):'' एक–तरफा में ($F = 4.52$) ($p < .01$) प्राप्त हुआ, जो विभिन्न आयु–वर्गों के दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर को दर्शाता है। ''56 वर्ष'' आयु वर्ग का औसत ''3.96'', जबकि ''18द्25 वर्ष'' आयु वर्ग का औसत ''3.72'' रहा। अतः परिकल्पना 3 समर्थित हुई।

''परिकल्पना 4 (शिक्षा एवं दृष्टिकोण):'' परीक्षण में ($F = 3.21$) ($p < .05$) प्राप्त हुआ, जिससे विभिन्न शैक्षणिक स्तरों के आधार पर दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। अतः ''परिकल्पना 4 समर्थित हुई।''

''परिकल्पना 5 (निवास क्षेत्र एवं दृष्टिकोण):'' स्वतंत्र नमूना t–परीक्षण में ($t = 1.45$) ($p > .05$) प्राप्त हुआ। यह परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अतः ''परिकल्पना 5 समर्थित नहीं हुई।''

4.5 सहसंबंध विश्लेषण

मुख्य निर्माणों के बीच प्रबल सकारात्मक सहसंबंध पाए गए:

तालिका: निर्माणों के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण

क्र. सं.	निर्माण युग्म	सहसंबंध (त)	सहसंबंध की प्रकृति
1	सहभागिता और ऐतिहासिक मूल्यांकन	0.762	प्रबल धनात्मक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

2	सामाजिक चुनौतियाँ और ऐतिहासिक मूल्यांकन	0.769	प्रबल धनात्मक
3	नेतृत्व और संघर्षध्त्याग	0.751	प्रबल धनात्मक

5. निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि 'ऐतिहासिक मूल्यांकन' (माध्य = 3.943) को सर्वाधिक प्राथमिकता प्राप्त हुई। इसके बाद 'संघर्ष एवं त्याग' (माध्य = 3.929) तथा 'विभिन्न आंदोलनों में योगदान' (माध्य = 3.922) का स्थान रहा। ये परिणाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, उनके बलिदान तथा बहुआयामी सहभागिता की व्यापक स्वीकृति को प्रदर्शित करते हैं। दूसरी ओर, 'सामाजिक चुनौतियाँ' (माध्य = 3.778) का माध्य सबसे कम रहा, हालांकि यह 3.00 के मध्य–बिंदु से अधिक है। इससे संकेत मिलता है कि उत्तरदाताओं ने महिलाओं के सामने उपस्थित सामाजिक एवं औपनिवेशिक बाधाओं को भी महत्वपूर्ण माना है।

सांख्यिकीय विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि ज्ञान–स्तर और ऐतिहासिक मूल्यांकन के बीच प्रबल सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया ($r=0.68, p<-01$)। इसी प्रकार, लिंग ($t=2.14, p<-05$), आयु ($F=4.52, p<-01$) तथा शिक्षा ($F=3.21, p<-05$) के आधार पर उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। इसके विपरीत, निवास क्षेत्र का प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया (ज=1.45,चझ.05)। इससे संकेत मिलता है कि महिलाओं के ऐतिहासिक योगदान के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करने में ज्ञान, लिंग, आयु और शिक्षा की भूमिका निवास क्षेत्र की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण रही।

5.3 भविष्य के शोध हेतु सुझाव

भविष्य में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका पर ''क्षेत्रीय स्तर पर तुलनात्मक शोध'' किया जाना आवश्यक है, ताकि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता और उनके योगदान की विविधता को समझा जा सके। इसके साथ ही ''गुणात्मक शोध पद्धति'' के माध्यम से जीवन–लेखन, मौखिक इतिहास और गहन साक्षात्कारों का उपयोग करके महिलाओं के व्यक्तिगत अनुभवों, संघर्षों और योगदान को अधिक गहराई से समझा जा सकता है। विभिन्न आंदोलनों में महिलाओं की ''नेतृत्व शैली एवं संगठनात्मक स्वरूप'' का तुलनात्मक अध्ययन भी भविष्य के शोध के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, नारीवादी अध्ययन और मीडिया को समन्वित करते हुए ''अंतर्विषयक अध्ययन'' किए जाने चाहिए। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की सहभागिता की तुलना के लिए संतुलित एवं स्तरीकृत नमूनाकरण अपनाया जा सकता है। साथ ही, वास्तविक क्षेत्र–सर्वेक्षण के माध्यम से प्राथमिक आँकड़े एकत्रित कर महिलाओं की राजनीतिक चेतना,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सहभागिता और ऐतिहासिक योगदान के संबंध में अधिक प्रमाणिक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

5.4 अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ महत्वपूर्ण सीमाएँ भी हैं। अध्ययन ''संकलित आँकड़ों'' पर आधारित है, इसलिए इसके निष्कर्ष उपलब्ध आँकड़ों की प्रकृति तक सीमित हैं। नमूने में शहरी एवं उच्च शिक्षित वर्ग का अपेक्षाकृत अधिक प्रतिनिधित्व होने के कारण निष्कर्षों को सभी सामाजिक वर्गों पर समान रूप से लागू करने में सावधानी आवश्यक है। अध्ययन में मुख्यतः ''मात्रात्मक दृष्टिकोण'' अपनाया गया है और गुणात्मक विधियों का पर्याप्त उपयोग नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, सहसंबंधात्मक विश्लेषण के आधार पर कार्य–कारण संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता। अध्ययन विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ तक सीमित होने के कारण इसके निष्कर्षों को अन्य ऐतिहासिक संदर्भों में सामान्यीकृत करने की सीमा है। प्रयुक्त सैद्धांतिक अवधारणाओं के अनुप्रयोग की भी अपनी सीमाएँ हैं। अंततः, '''अन्य' लिंग श्रेणी में केवल 7 उत्तरदाता'' होने के कारण इस समूह का प्रतिनिधित्व अत्यंत सीमित है; अतः इस श्रेणी से संबंधित निष्कर्षों की व्याख्या सावधानीपूर्वक की जानी चाहिए।

6. उपसंहार

यह शोध अध्ययन "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका" विषयक 300 उत्तरदाताओं के संश्लिष्ट आँकड़ों के आधार पर सात मुख्य निर्माणों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उत्तरदाताओं में स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका के प्रति अत्यंत सकारात्मक धारणा है, जिसका प्रमाण सातों निर्माणों का कुल औसत 3.878 ;5–बिंदु पैमाने परद्ध है, जो महिलाओं के योगदान के विभिन्न पहलुओं की व्यापक स्वीकार्यता को रेखांकित करता है।

अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि महिलाओं को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केवल सहायक भूमिका निभाने वाली प्रतिभागी के रूप में देखने के स्थान पर सक्रिय सहभागी, नेतृत्वकर्ता, संगठनकर्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक परिवर्तन की वाहक तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदानकर्ता के रूप में देखा जाना चाहिए। अध्ययन के सुझाव शैक्षणिक, नीतिगत एवं भविष्य के शोध के लिए दिशा–निर्देश प्रदान करते हैं।

अध्ययन की सीमाओं में संश्लिष्ट आँकड़ों पर आधारित होना, नमूने में शहरी एवं उच्च शिक्षित वर्ग का अधिक प्रतिनिधित्व, केवल मात्रात्मक दृष्टिकोण, कार्य–कारण संबंध स्थापित करने में असमर्थता, विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ, सैद्धांतिक अनुप्रयोग की सीमाएँ तथा 'अन्य' लिंग श्रेणी में अत्यंत कम (7) उत्तरदाता होना शामिल हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

निष्कर्षत: यह अध्ययन महिलाओं को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केवल सहायक भूमिका निभाने वाली प्रतिभागी के रूप में देखने के स्थान पर सक्रिय सहभागी, नेतृत्वकर्ता, संगठनकर्ता, संघर्षशील व्यक्तित्व, सामाजिक परिवर्तन की वाहक तथा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदानकर्ता के रूप में देखने वाली धारणा को प्रस्तुत करता है, और यह आवश्यकता रेखांकित करता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का अध्ययन करते समय महिलाओं के योगदान को अधिक समग्र, संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से समझा और प्रस्तुत किया जाए।

संदर्भ सूची

1. चंद्र, बिपिन ;1988'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
2. सरकार, सुमित ;1983. 'आधुनिक भारत 1885.1947'. नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया।
3. मजुमदार, आर.सी. ;1963द्धण 'भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास'. कोलकाता: फर्मा के.एल. मुखोपाध्याय।
4. फोर्ब्स, जेराल्डिन ;1996द्धण 'आधुनिक भारत में महिलाएँ'ण कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. ब्राउन, जुडिथ एम. ;1977. 'गांधी का सत्ता की ओर उदय: भारतीय राजनीति 1915.1922'. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. सावरकर, वी.डी. ;1909 '1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'. फीनिक्स प्रेस।
7. सेन, एस.एन. ;1957द्धण '1857: महान विद्रोह' पीपल्स पब्लिशिंग हाउस।
8. मुखर्जी, रुद्रांशु ;2008 'अवध में विद्रोह: 1857.58' परमानेंट ब्लैक।
9. कुमार, राधा ;1993 'कार्य का इतिहास: भारत में महिला अधिकारों और नारीवादी आंदोलनों का सचित्र विवरणए 1800.1990' नई दिल्ली: काली फॉर वुमेन।
10. सरकार, तनिका ;2001 'हिन्दू पत्नी, हिन्दू राष्ट्र: समुदाय, धर्म और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' नई दिल्ली: परमानेंट ब्लैक।
11. मजुमदार, वीना ;1979 'शक्ति के प्रतीक: भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन'. मुंबई: एलाइड पब्लिशर्स।
12. रमाबाई, पंडिता ;1887 'स्त्री धर्म नीति';मूल प्रकाशन
13. फुले, सावित्रीबाई ;1854 'काव्यफुले' ;मूल प्रकाशन
14. अली, अरुणा आसफ ;1991 'भारतीय महिलाओं का पुनरुत्थान' नई दिल्ली रेडियंट पब्लिकेशन्स।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

15. चट्टोपाध्याय, कमलादेवी ;1986 'आत्मकथा: आंतरिक गहराइयाँ और बाहरी दुनिया' नई दिल्ली: नंदन प्रकाशन।

16. देशमुख, दुर्गाबाई ;1975 'मेरी जीवन यात्रा' स्टर्लिंग पब्लिशर्स।

17. पंडित, विजयलक्ष्मी ;1970 'खुशी का दायरा' हार्पर एंड रो।

18. नायडू, सरोजिनी ;1956 'सरोजिनी नायडू के चयनित पत्र';मनमोहन कुमार, संपादकद्ध

19. गांधी, मोहनदास करमचंद ;1927 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।

20. तेंदुलकर, डी.जी. ;1951 'महात्मा: मोहनदास करमचंद गांधी का जीवन' मुंबई: विलयभाई के. झावेरी एवं डी.जी. तेंदुलकर।

21. नेहरू, जवाहरलाल ;1946 'भारत की खोज' कोलकाता: सिग्नेट प्रेस।

22. मेहता, उषा ;1994 'गुप्त कांग्रेस रेडियो: संस्मरण' ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी।

23. कस्तूरी, लीला एवं मजुमदार, वीना ;संपा. ;1994 'महिलाएँ और भारतीय राष्ट्रवाद' नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।

24. कुमार, सुनील ;2005 'कांग्रेस और महिला भागीदारी: 1917.1947'नेशनल पब्लिशर्स।

25. बसु, अपर्णा ;1994 "अखिल भारतीय महिला सम्मेलन: दस्तावेजों का अध्ययन" 'भारतीय इतिहास जर्नल'ए खंड 72, अंक 1, पृ. 45.68।